Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 6
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

अलका सरावगी के कहानियों में नैतिक जीवन-मूल्य

कु. राजवती
शोधार्थी, हिन्दी–विभाग आगरा कॉलेज, आगरा।

शोधसारांश- जीवन–मूल्य के समतुल्य माने जाना अनुचित न होगा क्योंकि जीवन मूल्यों की तरह मानव के कतिपय नैतिक कर्तव्य, नैतिक धर्म, नैतिक जिम्मेदारी आदि दायित्व होते हैं, जो प्रसंगानुसार अर्थ देते हैं। नैतिक मानव मूल्यों के परिणाम अब विवाह योग्य, विचार दाम्पत्य जीवन के लिए प्रेम–विवाह में भी व्यवहृत होने लगे हैं। हमारी परम्पराओं जो नैतिक मूल्य समाहित हैं वे पूर्व से अपरिचित जोड़ों को जीवन–साथी बनाने में अपना अमिट योगदान देते हैं।

मुख्य शब्द- अलका सरावगी, कहानी, नैतिक, जीवन–मूल्य, स्त्री–पुरुष, मानव, स्वतन्त्रता।

डॉ. अलका सरावगी की कहानियों में नैतिक जीवन–मूल्यों की अधिकता है, वे आदमी को आदमियत के गुणों से भरा देखना चाहती है। इतना ही नहीं, उनकी कहानी के पात्र नैतिक गुण–विचारों वाले हैं।

"पुरुष भले ही अपने को स्त्रियों से श्रेष्ठ समझते हों पर दुनियाँ में राज स्त्रियों का ही है। पुरुषों की सबसे अधिक दिलचस्पी औरतों में ही होती है, भले ही वे कितना ही दिखाएँ कि उनकी दिलचस्पी संसार की अधिक गम्भीर चीजों में हैं। स्त्री–पुरुषों को जीवन – कहा गया है और हैं भी। दूर–दराज की किसी लड़की से लड़के का विवाह एक संयोग माना जाता है, परन्तु लड़की सुन्दर, सुशील, सज्जन, सहयोगी जीवन साथी की प्राप्ति के लिए कितने व्रत, त्यागों के साथ मर्यादित जीवन जीते हुए जो वर प्राप्त करती है, वह उसके नैतिक मूल्यों का परिणाम है। पुरुष भले ही अपने को श्रेष्ठ समझते हों, परन्तु दिलचस्पी औरतों में ही सर्वाधिक होती है। इन्हीं नैतिक मानव मूल्यों के परिणाम अब विवाह योग्य, विचार दाम्पत्य जीवन के लिए प्रेम–विवाह में भी व्यवहृत होने लगे हैं। हमारी परम्पराओं जो नैतिक मूल्य समाहित हैं वे पूर्व से अपरिचित जोड़ों को जीवन–साथी बनाने में अपना अमिट योगदान देते हैं। तभी तो डॉ. सरावगी आगे कहती है–

"प्रेम भारी सहुलियतें और सुरक्षाएँ भले ही दे सकता है, पर स्वतन्त्रता छीन लेता है। सम्बन्धों की निकटता में सुरक्षा तो जरूर है, पर उतनी ही घुटन भी है। 74 केवल प्रेम–प्यार करने वाले पुरुष, स्त्रियों को अधिकाधिक सहुलियतें, सुविधाएँ और सुरक्षा देने में अपने नैतिक दायित्वों के निर्वाह की बात बड़ी मजबूती से कहते–करते हैं, परन्तु उस स्थिति में दोनों ओर की स्वतन्त्रता नहीं रह पाती। सम्बन्धों की निकटता सुरक्षा तो अवश्य महसूस की जाती रहती है, परन्तु उससे अधिक कहीं स्वतन्त्रता में बाधक भी बनती है और यह स्थिति सामान्यत: स्त्री–पुरुषों के परस्पर सम्बन्धों में दूरियाँ, असहयोग शंकाएँ और अविश्वास की स्थितियाँ निर्मित करती है। जब तक स्त्री– पुरुष अपने नैतीक दायित्वों का निर्वाह बखूबी करते रहेंगे। तब तक वे इन स्थितियों से बचे रहेंगे और उनका दाम्पत्य जीवन सुखमय, शान्त और समृद्धशाली बना रहेगा।

"हर बात पर सारी दुनिया से सर टकराने के लिए तैयार रहने वाला प्रतिभावान से प्रतिभावान व्यक्ति भी अन्त में अपने को खर्च कर चुक जाता है। 75 मानव समाज के उत्थान के लिए यह उचित नहीं कि हम सक्षम और समर्थ होते हुए प्रतिभावानों को सही मार्ग न दिखाएँ, उनको सहयोग समर्थन न दें। ऐसी स्थिति में अन्त में आदमी निराश हो हार मान लेता है और

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

उसकी प्रतिभा मिट्टी में मिल जाती है। प्रतिभा मिट्टी में तो मिले, परन्तु फिर उसमें फूल खिलें, जिनसे समाज और वातावरण दोनों सुगन्धित हों। ऐसे नैतिक जीवन–मूल्यों को हमें बनाए रखना है।

कभी–कभी बड़े–बड़े विद्वान लोग अपनी विद्वता की धाक जमाने के लिए किसी भी ग्रंथ के नाम पर किसी भी संदर्भ को जोड़ देते हैं। और अपनी बात या अपने मत को प्रमाणित करने के लिए वे ऐसा करने में कोई संकोच नहीं करतें। जैसा कि डॉ. सरावगी ने अपनी एक कहानी के अंश में इस प्रकार लिखा है–

"एक नामी विद्वान अपने भाषण में मनगढ़ंत किताबों के मनमाने संदर्भ तक दे देते हैं और बहुत से लोग जानकर भी चुप रहते हैं ।'' कभी–कभी विद्वान व्यक्ति भी अपने भाषण में मनगढन्त किताबों के संदर्भ दे देता है, इस विश्वास से कि उनके ज्ञान – विस्तार की धाक जमेगी, परन्तु इसका दो प्रकार का प्रभाव पड़ता है कि अनजान व्यक्ति तो विश्वास कर लेते हैं, परन्तु जानकार आदमी यह सब 'कुछ' जानकर भी चुप रहते हैं और उसके विरोध में अपना मुँह तक नहीं खोलते। जैसा सुधा, निशा, प्रभा के बीच होता है। पेपर में कुछ भी लिखा या पढ़ा जाए, परन्तु सच तो यह भी है कि प्रतिभा को यदि जगह न मिले तो वह विनाश की ओर ही मुड़ती है। इस विनाशता को बचाना हम सबका नैतिक कर्तव्य है। यह सत्य है कि प्रतिभा हमेशा आगे बढ़ती है। आगे बढ़ने के दौरान यदि उसका मार्ग सही चयनित नहीं हुआ, तो सामान्य–स्वभावत: गलत दिशा ;मार्गद्ध की ओर तो होगा ही। क्योंकि उसका विचार और व्यवहार दोनों सक्रिय रहते हैं। निष्क्रियता प्रतिभावान आदमी के लिए झेलना बड़ा कठिन कार्य है।

दूसरी कहानी– डॉ. अलका सरावगी के कथा–साहित्य में नैतिक जीवन–मूल्य निहित हैं, जिन्हें जीवन–मूल्य के समतुल्य माने जाना अनुचित न होगा क्योंकि जीवन मूल्यों की तरह आदमी के कतिपय नैतिक कर्तव्य, नैतिक धर्म, नैतिक जिम्मेदारी आदि दायित्व होते हैं, जो प्रसंगानुसार अर्थ देते हैं।

"अपर्णा ने यह जान लिया था कि अक्सर लोग कहने के लिए ही कुछ कहते हैं और दरअसल वे एक राहत ही महसूस करते होंगे कि उनके जीवन में ऐसी कोई समस्या नहीं आई। वे घर जाकर अपने बच्चों को अधिक दुलारते हैं। जिन्हें वे अन्यथा हमेशा पढ़ने में या खेल में बेहतर बनाने के लिए डाँटते– झिड़कते रहते हैं''।

यहाँ पर बच्चों को खेल में, पढ़ने में या फिर किसी क्षेत्र विशेष में बेहतर बनाने के लिए डाँटना– झिड़कना वास्तविक क्रोध या आक्रोश में डाँटना न होकर एक नैतिक कर्तव्य का निर्वाह है, ताकि बच्चे अनुशासित रहकर अपने दायित्व को समझते हुए पिता द्वारा दिए गए निर्देश या प्रोत्साहन के तहत आगे चल कर सामान्य से ऊपर उठकर कुछ अच्छे इन्सान बन सकें।

"अपनी अपनी जिन्दगी के रजिस्टर में दु:ख–सुख का हिसाब–किताब तो हमेशा दूसरों के दु:ख–सुख के अनुसार ही बनता है, जिसका अपने आप में कोई स्वतन्त्र लेखा–जोखा थोड़े ही होता है। 78 जीवन में वास्तव में दूसरों के सुख–दु:ख के समान ही अपना सुख – दु:ख भी बनता और मिटता है क्योंकि परिवार के किसी व्यक्ति के दु:ख को व्यक्ति नैतिक रूप से अपना दु:ख समझता है और परिवार का कोई व्यक्ति सुख का अनुभव करता या भोगता है, तो उसे देख व्यक्ति अपना सुख समझकर स्वयं सुख का अनुभव करता है, विशेष रूप से बच्चों के मामलों में यह कहते हुए भी सुना गया कि हमारे बच्चे सुखी, तो अब हमें कैसा दु:ख ? "कलकत्ते से 300 किमी. दूर बने इस विश्रामगृह में बूढ़ों, बच्चों, स्त्रियों सभी का अपना–अपना मेला हर साल जाड़े में जुट जाता है। सबकी अपनी मण्डली है– कहीं कीर्तन भजन की, कहीं ताश– चौपड़ की, कहीं फिल्मी धुनों पर अंत्याक्षरी की। शहर में जो लोग अपने जान–पहचान वालों तक से बोलने – बतलाने में कतराते हैं, वे भी यहाँ की हवा के असर से अचानक मिलनसार हो उठते हैं। सबको मालूम है कि दोस्ती अस्थाई है, शहर में लौटने के बाद कोई किसी को याद तक नहीं करेगा, पर इस बात से उस छोटे से साथ में आत्मीयता में कोई कमी नहीं आती।''

कलकत्ते से दूर बने विश्रामगृह में पहुँचकर आदमी अपने-अपने रंग में रंग जाता है। वहाँ उसे अपने-पराए का ख्याल नहीं रह जाता। सभी अपने नजर आते हैं। यह अपना और पराया ही तो दु:ख का मूल कारण है। अपनत्व में नैतिकता जाग्रत हो जाती है क्योंकि आश्रम में अपनत्व को नैतिकता की ऐसी हवा बहती है, जिसमें सभी अचानक मिलनसार हो जाते हैं। अनैतिक विचार अचाकन ऐसे लुप्त हो जाते हैं, जैसे वे कभी मन में रहे ही न हों। यही आत्मीयता उन्हें जोड़ती है और मन को मन के साथ जोड़कर निश्छल हो जाती है। "आदमी के अन्दर ऐसे अनुभव की गहरी चाह कभी मरती नहीं, जहाँ उसका अहंकार मटियामेट हो जाए। और नहीं होता, तो वह धर्म की शरण में जाता है। आदमी के अनुभव की गहरी इच्छा कभी नहीं मिरती, जबकि उसका अहंकार, गर्वद्ध ही समाप्त हो जाए और कुछ नहीं होता तो वह अन्त में धर्म की शरणागत हो जाता है और धर्म कभी अधर्म और अनैतिक कार्यों की स्वीड्डति न देकर सदैव पीड़ा हरने और असहायों को सहायता करने की ही बात की सीख देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अलका सरावगी के कथा साहित्य का मूल्यांकन
2. पृष्ठ संख्या 74
3. पृष्ठ संख्या 75
4. पृष्ठ संख्या 79
5. पृष्ठ संख्या 80
6. पृष्ठ संख्या 178
7. पृष्ठ संख्या 179
8. पृष्ठ संख्या 180
9. पृष्ठ संख्या 181